International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.389-393

उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि द्वारा शिक्षण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

प्रो. (डॉ.) रीटा शर्मा*
गरिमा मीना**

शोध सारांश

आज ज्ञान का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है, अतः राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुसार विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर को उच्च बनाने के लिए नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रयोग की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान में मनोविज्ञान के शिक्षा में प्रवेश करने के कारण अन्य नई विधियों को अपनाने पर बल दिया जा रहा है। ये शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ उनकी मानसिक योग्यता जैसे– कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति, चिन्तन शक्ति आदि को सकारात्मक स्वरूप प्रदान करती है। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च प्राथमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। शोधकर्त्री द्वारा 15–15 पाठ योजनाएँ (अभिक्रमित अनुदेश विधि एवं खेल विधि) की बनाकर शिक्षण करवाया गया तथा दत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित हिन्दी शिक्षण उपलब्धि परीक्षण का निर्माण कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात की गयी। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। निष्कर्षों से मालूम होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया। आँकड़ों के अध्ययन करने पर यह भी पता चलता है कि खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अभिक्रमित अनुदेशन विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त प्राप्त मध्यमान से अधिक पाया गया। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिक्रमित अनुदेशन विधि शिक्षण की अपेक्षा खेल विधि द्वारा शिक्षण अधिक उपयोगी है।

मुख्य शब्दः *कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति, चिन्तन शक्ति, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणांक।*

प्रस्तावना

''भारत के भाग्य का निर्माण इस समय कक्षाओं में हो रहा है''

–कोठारी कमीशन

यदि उपर्युक्त कथन पर ध्यान दिया जाये तो स्पष्ट है कि कल के भारत का निर्माण आज के शिक्षक ही है। शिक्षक वर्तमान में शिक्षा जगत में हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को ढ़ालते हुए विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। एक शिक्षक के मनोबल संतुष्टि, श्रेष्ठ शिक्षण पद्धति, नवीन प्रयोगों उद्देश्यपूर्ण शिक्षण आदि के आधार पर ही श्रेष्ठ व स्वस्थ भावी नागरिकों का निर्माण सम्भव है। नई सदी में मानववादी शिक्षक के प्रसार द्वारा नये समाज का निर्माण शिक्षक का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए क्योंकि शिक्षा तो इंसान के जीवन में आरम्भ से लेकर अन्त तक चलने वाली अविरल धारा है। शिक्षा ही राष्ट्र के निर्माण में देश की संस्कृति व राष्ट्र के विकास हेतु प्रेरणा दायिनी है।

---

* प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

समस्या का औचित्य

आज ज्ञान का प्रसार तीव्र गति से हो रहा है, अतः राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुसार विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर को उच्च बनाने के लिए नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रयोग की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान में मनोविज्ञान के शिक्षा में प्रवेश करने के कारण अन्य नई विधियों को अपनाने पर बल दिया जा रहा है। ये शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ उनकी मानसिक योग्यता जैसे– कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति, चिन्तन शक्ति आदि को सकारात्मक स्वरूप प्रदान करती है। विद्यार्थियों के मनोविज्ञान पर बल देने के कारण आज छात्र, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के केन्द्र बिन्दु हो गये है। इस कारण से छात्र केन्द्रित विधियॉ अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है।

समस्या कथन

''उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि द्वारा शिक्षण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

- **उच्च प्राथमिक विद्यालय–** प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक विद्यालय से आशय कक्षा 8वीं के सरकारी एवं निजी विद्यालयों से है।
- **अभिक्रमित अनुदेशन विधि–** अभिक्रमित अनुदेशन विधि से तात्पर्य उस विधि से है, जिसमें पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध रूप में छोटे–छोटे पदों में प्रस्तुत करके प्रत्येक पद को पढ़ने के साथ विद्यार्थियों को अनुक्रिया करने का अवसर मिलता है।
- **खेल विधि–** यह विधि बालकों को उसी उत्साह से सीखने की क्षममा देती है जो उसके स्वाभाविक खेल में पायी जाती है। यह विधि विद्यार्थियों की क्रियाओं को इस प्रकार मोड़ देती है कि लाभप्रद शैक्षिक परिणाम प्राप्त होते हैं।
- **शैक्षिक उपलब्धि–** शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि अध्ययन सामग्री को विद्यार्थियों ने किस सीमा तक ग्रहण किया है। प्रस्तुत शोध कार्य में उपलब्धि से तात्पर्य अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि से शिक्षण के पश्चात विद्यार्थियों के मूल्यांकन द्वारा प्राप्त अंकों से है।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न

- क्या अभिक्रमित अनुदेशन विधि हिन्दी व्याकरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है?
- क्या खेल विधि हिन्दी व्याकरण के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है?
- क्या अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में अन्तर पाया जाता है?

शोध के उद्देश्य

- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में खेल विधि द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए **प्रयोगात्मक विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध के चर

प्रस्तुत शोध में दो चरों को लिया गया है। जो निम्नलिखित है–

- **स्वतंत्र चर–** अभिक्रमित अनुदेश एवं खेल विधि
- **आश्रित चर–** शैक्षिक उपलब्धि

जनसंख्या एवं न्यादर्श

- **जनसंख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में जयपुर शहर के कक्षा आठवीं के सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा जयपुर शहर के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध के उपकरण

- अभिक्रमित अनुदेशन विधि पर आधारित तथा खेल विधि पर आधारित समान प्रकरण की पाठ योजनाएं।
- अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि द्वारा शिक्षण की प्रभावशीलता की जाँच हेतु दोनों समूहों के लिए एक समान स्व–निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण।
- हिन्दी शिक्षण उपलब्धि परीक्षण– स्वनिर्मित।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिणाम जानने के लिए निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है–

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी–परीक्षण
- सह–सम्बन्ध गुणांक

शोध की परिसीमाएँ

- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल राजस्थान बोर्ड से मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य सरकारी व निजी विद्यालयों के 120 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
- शोध अध्ययन में केवल जयपुर जिले के निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध कार्य में केवल अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि की प्रभावशीलता के अध्ययन तक सीमित रखा गया है।

सारणीयन एवं विश्लेषण

परिकल्पना–1 हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक अन्तर	निष्कर्ष
अभिक्रमित अनुदेशन विधि के विद्यार्थी	60	31.55	4.22	4.75	0.05=1.98	अस्वीकृत
खेल विधि के विद्यार्थी	60	34.78	3.18		0.01=2.62	अस्वीकृत

$(df = N_1+N_2-2) = 60+60-2 = 118$

सारणी संख्या–1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का टी–मान स्वतंत्रता के अंश 118 पर 4.75 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर दिये गये तालिका मान से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–2 हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक अन्तर	निष्कर्ष
अभिक्रमित अनुदेशन विधि के छात्र	30	29.40	4.01	4.63	0.05=2.00	अस्वीकृत
खेल विधि के छात्र	30	34.03	3.38		0.01=2.66	अस्वीकृत

$(df = N_1+N_2-2) = 30+30-2 = 58$

सारणी संख्या–2 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का टी–मान स्वतंत्रता के अंश 58 पर 4. 63 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर दिये गये तालिका मान से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–3 हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक अन्तर	निष्कर्ष
अभिक्रमित अनुदेशन विधि की छात्राएँ	30	33.70	3.27	2.32	0.05=2.00	अस्वीकृत
खेल विधि की छात्राएँ	30	35.53	2.84		0.01=2.66	स्वीकृत

$(df = N_1+N_2-2) = 30+30-2 = 58$

सारणी संख्या–3 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का टी–मान स्वतंत्रता के अंश 58 पर 2.32 प्राप्त हुआ। जो 0.05 स्तर पर दिये गये तालिका मान से अधिक एवं 0.01 स्तर पर दिये गये तालिका मान से कम है। अतः हमारी परिकल्पना 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–4 हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

सारणी 4

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थक तालिका मान	निष्कर्ष
अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध	120	0.28	0.05=0.174	अस्वीकृत
			0.01=0.228	अस्वीकृत

(df = N_1+N_2-2) =60+60-2 = 118

सारणी संख्या–4 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.28 प्राप्त हुआ, जो धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक स्वतंत्रता के अंश 118 पर तालिका मान 0.05 एवं 0.01 दिये गये तालिका मान से अधिक है। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि एवं खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

समग्र निष्कर्ष

निष्कर्षों से मालूम होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया। आँकड़ों के अध्ययन करने पर यह भी पता चलता है कि खेल विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अभिक्रमित अनुदेशन विधि द्वारा शिक्षण के उपरान्त प्राप्त मध्यमान से अधिक पाया गया। जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिक्रमित अनुदेशन विधि शिक्षण की अपेक्षा खेल विधि द्वारा शिक्षण अधिक उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जे. सी. (2003) : शैक्षिक तकनीकी व प्रबन्ध, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- आजाद, वी. (2005) : प्रायोगिक शिक्षण में शिक्षक की गुणवत्ता, नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस।
- बायती, जमना लाल (2004) : नूतन पाठ योजनाएं, जयपुर, राजस्थान प्रकाशन।
- मित्तल, सन्तोष (2008) : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- सक्सेना, राधारानी (2010) : नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

❖◆❖